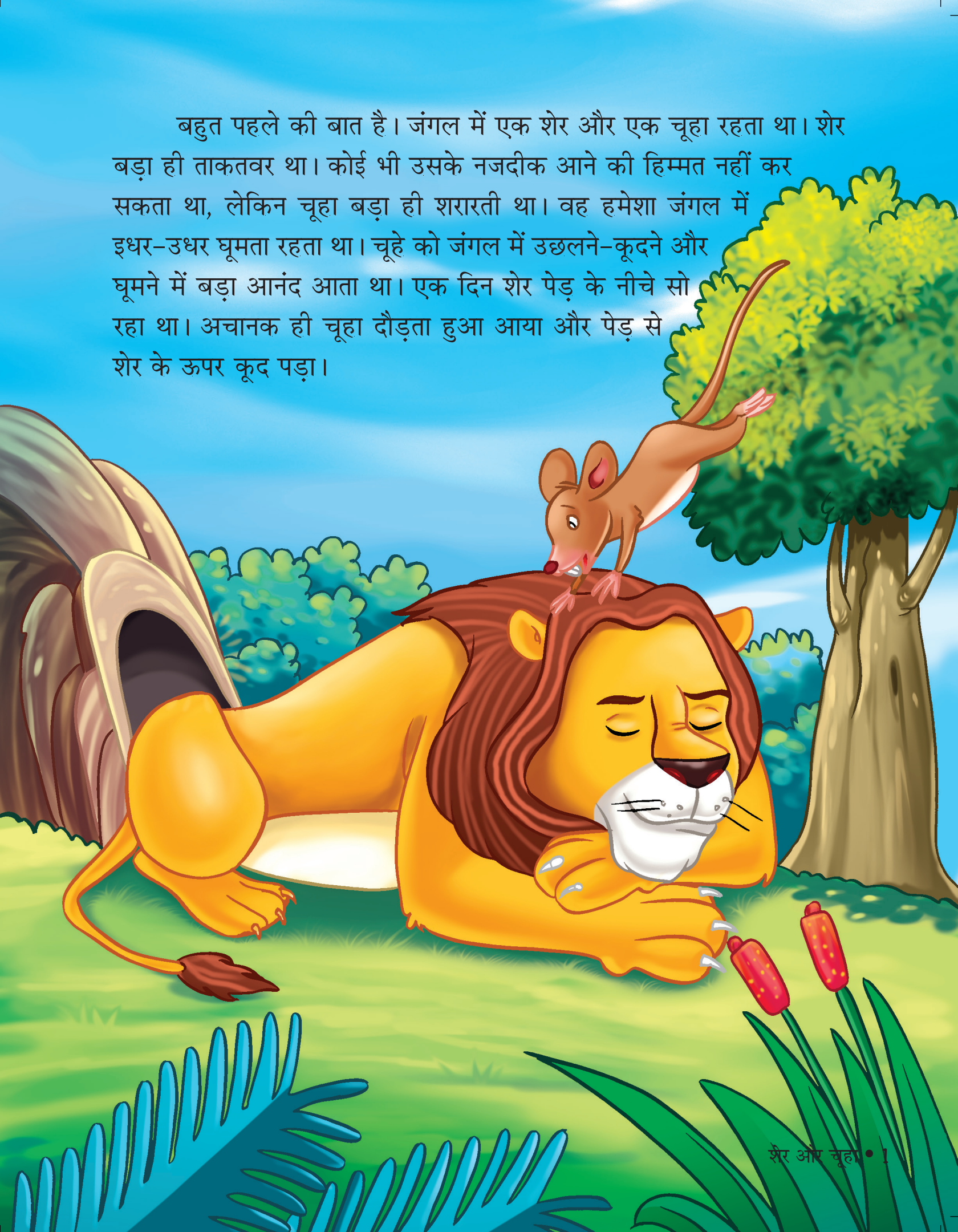
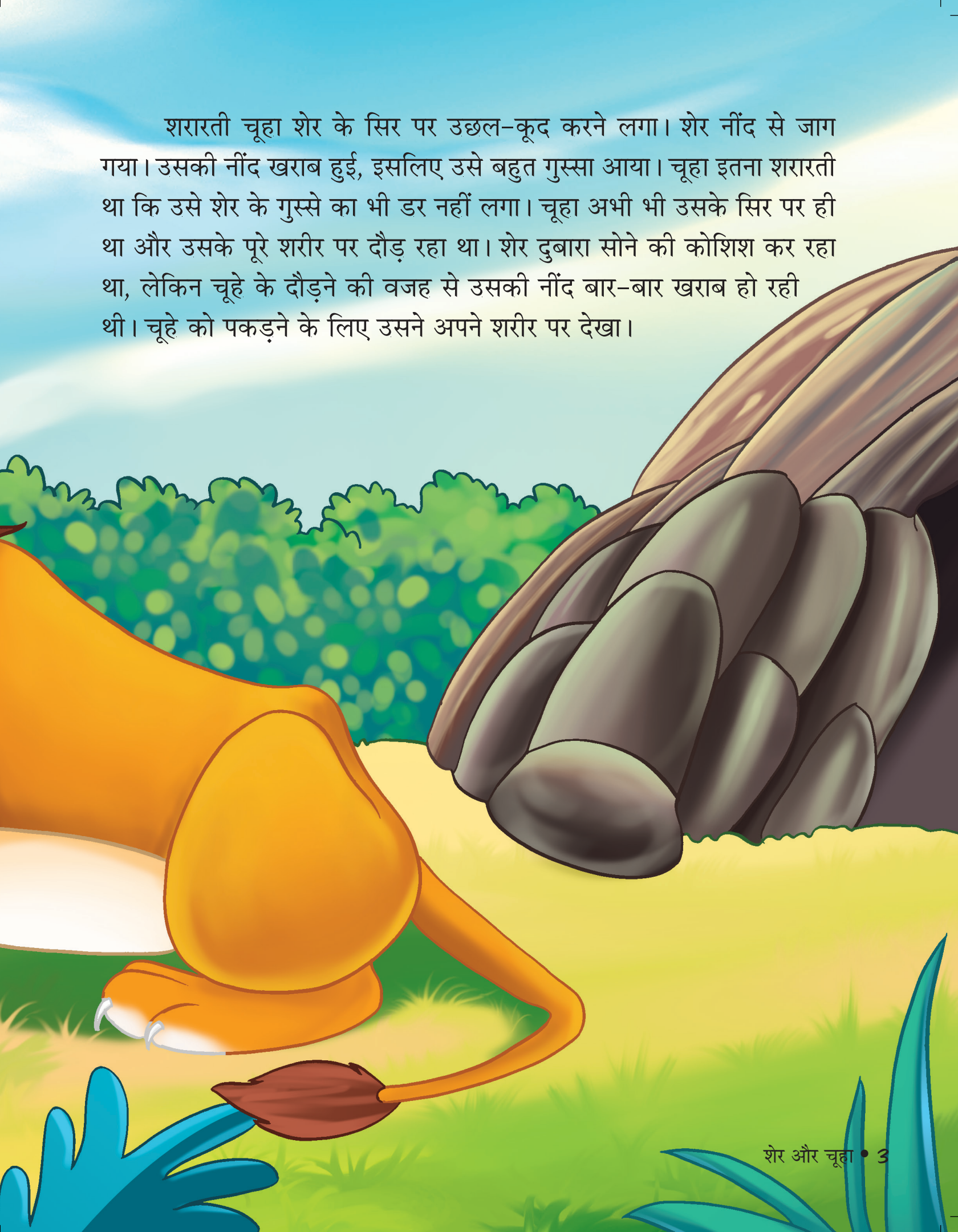
बहुत पहले की बात है। जंगल में एक शेर और एक चूहा रहता था। शेर बड़ा ही ताकतवर था। कोई भी उसके नजदीक आने की हिम्मत नहीं कर सकता था, लेकिन चूहा बड़ा ही शरारती था। वह हमेशा जंगल में इधर-उधर घूमता रहता था। चूहे को जंगल में उछलने-कूदने और घूमने में बड़ा आनंद आता था। एक दिन शेर पेड़ के नीचे सो रहा था। अचानक ही चूहा दौड़ता हुआ आया और पेड़ से शेर के ऊपर कूद पड़ा।





शरारती चूहा शेर के सिर पर उछल-कूद करने लगा। शेर नींद से जाग गया। उसकी नींद खराब हुई, इसलिए उसे बहुत गुस्सा आया। चूहा इतना शरारती था कि उसे शेर के गुस्से का भी डर नहीं लगा। चूहा अभी भी उसके सिर पर ही था और उसके पूरे शरीर पर दौड़ रहा था। शेर दुबारा सोने की कोशिश कर रहा था, लेकिन चूहे के दौड़ने की वजह से उसकी नींद बार-बार खराब हो रही थी। चूहे को पकड़ने के लिए उसने अपने शरीर पर देखा।





शेर ने अपना पंजा उठाकर चूहे को पड़कने की कोशिश की। चूहे ने बच निकलने की कोशिश की, लेकिन शेर ने उसे पकड़ ही लिया। शेर ने कहा, ''अरे नन्हे चूहे! तू मुझे क्यों परेशान कर रहा है? तुझे क्या चाहिए?'' चूहे ने डरते हुए कहा, ''महाशय, मैं तो बस अपने दोस्तों के साथ खेल रहा था। मुझे माफ कर दीजिए!'' शेर ने गुस्से में कहा, ''मैं तुझे खा जाऊँगा।'' चूहा गिड़गिड़ाने लगा, ''नहीं-नहीं, श्रीमान, मुझे छोड़ दीजिए।''

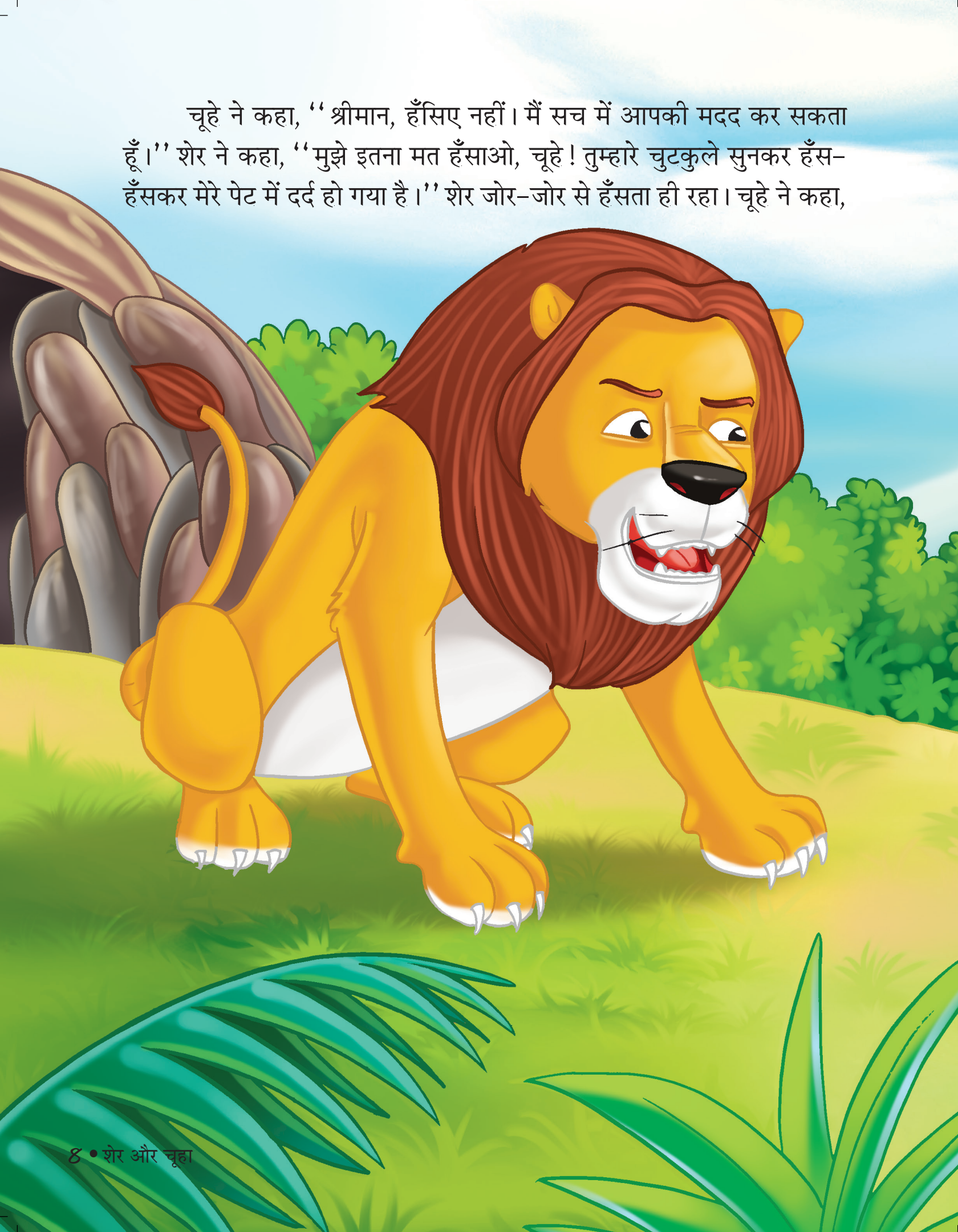


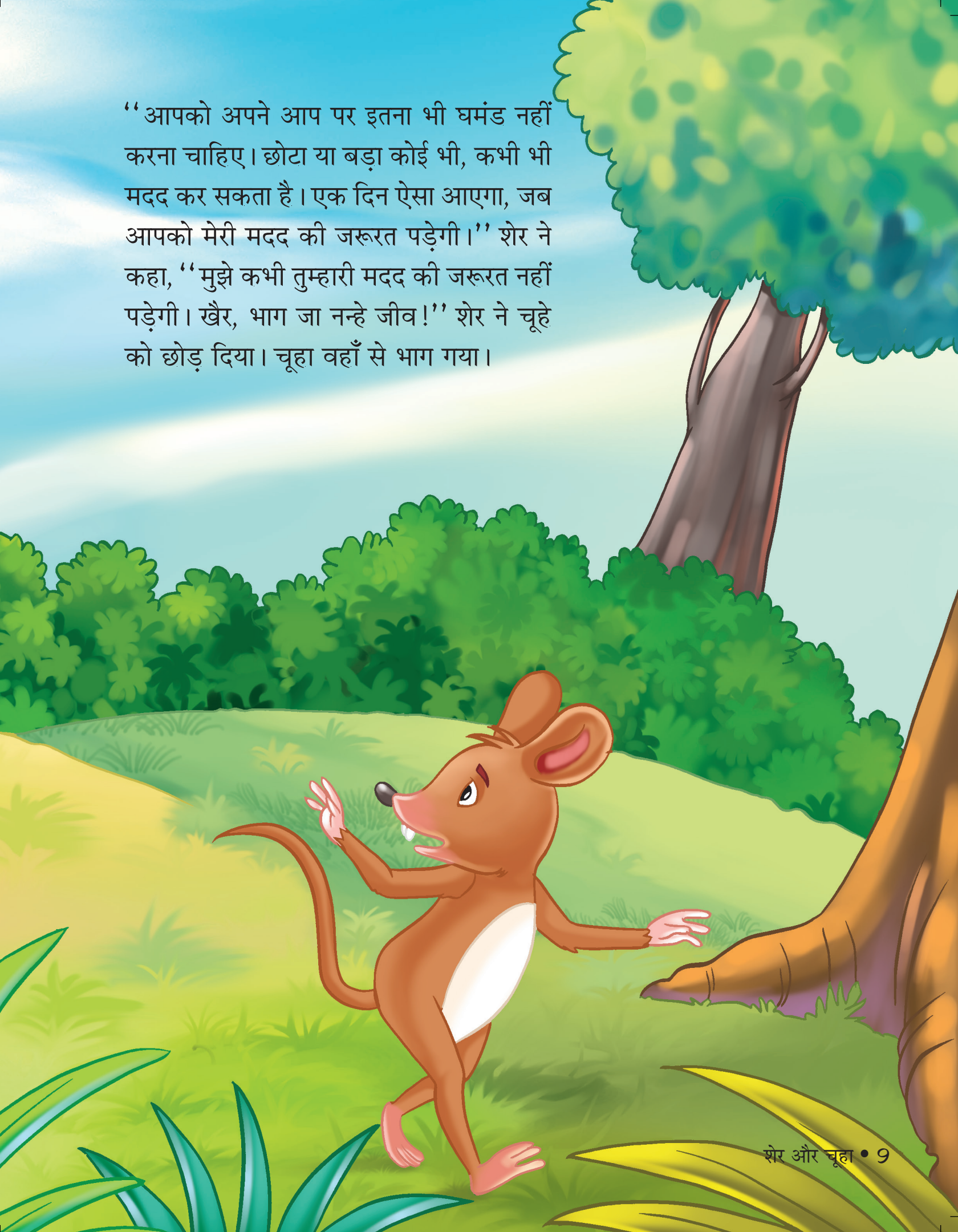


शेर ने कहा, ''मैं तुझे क्यों छोड़ूँ ?'' चूहे ने कहा, ''अगर आप आज मुझे छोड़ देंगे तो हो सकता है कि मैं भी कभी आपकी कोई मदद कर सकूँ।'' शेर बहुत जोर से हँसा और बोला, ''तू छोटा-सा जीव मेरी क्या मदद करेगा ? मैं कभी यह नहीं मान सकता हूँ कि तुम्हारे जैसा छोटा-सा चूहा मेरे जैसे बड़े जीव की मदद करेगा।''



चूहे ने कहा, ''श्रीमान, हँसिए नहीं। मैं सच में आपकी मदद कर सकता हूँ।'' शेर ने कहा, ''मुझे इतना मत हँसाओ, चूहे! तुम्हारे चुटकुले सुनकर हँस-हँसकर मेरे पेट में दर्द हो गया है।'' शेर जोर-जोर से हँसता ही रहा। चूहे ने कहा,





''आपको अपने आप पर इतना भी घमंड नहीं करना चाहिए। छोटा या बड़ा कोई भी, कभी भी मदद कर सकता है। एक दिन ऐसा आएगा, जब आपको मेरी मदद की जरूरत पड़ेगी।'' शेर ने कहा, ''मुझे कभी तुम्हारी मदद की जरूरत नहीं पड़ेगी। खैर, भाग जा नन्हे जीव!'' शेर ने चूहे को छोड़ दिया। चूहा वहाँ से भाग गया।



एक दिन एक शिकारी जंगल में आया। शिकार की तलाश में शिकारी जंगल में घूमने लगा। बहुत देर तक चलने के बाद अचानक शिकारी की नजर एक शेर पर पड़ी। शिकारी ने सोचा, 'मुझे इस शेर को मारना चाहिए। लेकिन पहले इसे पकड़ने के लिए जाल तो ले आऊँ, ताकि इसे लेकर शहर जा सकूँ।' शिकारी शेर का शिकार करने के लिए शिकारी धनुष-बाण लेकर झाड़ियों के पीछे छुप गया।





शिकारी ने जैसे ही अपना तीर चलाया, वह सीधा शेर के शरीर पर लगा। शेर घायल होकर जमीन पर गिर पड़ा। शिकारी ने तुरंत अपना जाल फेंका और शेर को उसमें पकड़ लिया। फिर शिकारी अपने साथियों को बुलाने के लिए चला गया, ताकि वे सब मिलकर शेर को शहर ले जा सकें। जाल में बंद शेर दर्द से तड़प रहा था। चूहा कहीं आस-पास ही घूम रहा था। उसने शेर के कराहने की आवाज सुनी तो भागता हुआ आया। उसने देखा कि शेर जाल में फँसा कराह रहा है।



चूहे ने कहा, ''देखिए, अब सिर्फ मैं ही आपकी मदद कर सकता हूँ।'' शेर ने कहा, ''हाँ चूहे, मुझे खेद है। कृपया मेरी मदद करो और मुझे इस जाल से बाहर निकालो।'' चूहे ने कहा, ''चिंता मत कीजिए, मैं जाल काट दूँगा और फिर आप अभी बाहर निकल जाएँगे।'' चूहे ने बाएँ से दाएँ जाल को तेजी से काट दिया। जल्द ही चूहे ने पूरा जाल काट डाला। शेर आजाद हो गया। शेर जाल से बाहर निकलकर बड़ा खुश था। शेर ने चूहे से कहा, ''तुम्हारा बहुत-बहुत शक्रिया! तुमने मेरी मदद की।''





चूहे ने कहा, ''श्रीमान शेर, मैं आपको तड़पते हुए नहीं देख सकता था। मैंने आपकी मदद इसलिए की कि आपने मुझे उस दिन मारा नहीं था और मेरी जान बख्श दी थी।'' शेर ने कहा, ''अब मैं समझ गया हूँ कि छोटा हो या बड़ा, कोई भी किसी की मदद कर सकता है।'' फिर शेर और चूहा दोस्त बन गए और मिल-जुलकर एक साथ रहने लगे।

